مختصر

# تفسير أحسن البيان

(باللغة الهندية)

# मुख़्तसर तफ़सीर

# अहसनुल बयान

तर्जमा

**मौलाना मोहम्मद जूनागढ़ी**

तफ़सीर

**हाफ़िज़ सलाहुद्दीन यूसुफ़**

हिन्दी तर्जमा व तरतीब

**मोहम्मद ताहिर हनीफ़**

دار السلام
DARUSSALAM

**दारुस्सलाम**
प्रकाशक एवं वितरक

# सूरतुत्तीन-९५

سُورَةُ التِّينِ

सूरतुत्तीन मक्का में उतरी और इस में आठ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क़सम है इंजीर की और ज़ैतून की।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ﴿1﴾

२. और सनायी के तूर (पर्वत) की।

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿2﴾

३. और इस शान्ति (अमन) वाले नगर की।[2]

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ﴿3﴾

---

[1] यानी जहाँ अल्लाह का नाम आता है, जैसे नमाज़, अज़ान और दूसरे बहुत सी जगहों पर आप का नाम भी आता है, पुरानी किताबों में आप की चर्चा और सिफ़तों का बयान है। फ़रिश्तों में आप की शुभ चर्चा है, आप के आज्ञापालन (इताअत) को अल्लाह ने अपना आज्ञापालन कहा है और अपनी इताअत के साथ आप की इताअत का भी हुक्म दिया है, इत्यादि।

[2] इस से अभिप्राय (मुराद) पाक नगर मक्का है जिस में लड़ाई अवैध (हराम) है, इस के सिवा जो इस में दाख़िल हो जाये उसको शान्ति मिल जाती है। कुछ व्याख्याकारों (मुफ़स्सिरों) का कहना है कि हक़ीक़त में तीन जगहों की क़सम है, जिन में से हर एक में महान (बड़ा) पैग़म्बर भेजे गये। इंजीर और ज़ैतून से मुराद वह इलाक़ा है जहाँ इसकी उपज है और वह बैतुल मोक़द्दस है जहाँ हज़रत ईसा पैग़म्बर (ईशदूत) बनकर आये। सिना पहाड़ या सीनीन पर हज़रत मूसा को नुबूअत (दूतत्व) प्रदान की गई और मक्का में पैग़म्बरों के सरदार हज़रत मोहम्मद रसूल अल्लाह (ﷺ) को भेजा गया। (इब्ने कसीर)

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ﴿4﴾

४. बेशक हम ने इंसान को बहुत अच्छे रूप में पैदा किया।

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ﴿5﴾

५. फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया।[1]

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿6﴾

६. लेकिन जो लोग ईमान लाये और फिर नेकी के काम किये, तो उन के लिए ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म न होगा।

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّينِ ﴿7﴾

७. तो तुझे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी बात उत्साहित (आमादा) करती है।[2]

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَاكِمِينَ ﴿8﴾

८. क्या अल्लाह (तआला) सभी हाकिमों का हाकिम नहीं है?

## سُورَةُ الْعَلَقِ

## सूरतुल अलक़-९६

सूरतुल अलक़* मक्का में उतरी और इस में उन्नीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ﴿1﴾

१. अपने रब का नाम लेकर पढ़ जिस ने पैदा किया।

---

[1] यह इशारा इंसान की ख़ूसट उम्र (बहुत ज़्यादा उम्र की तरफ़) जिस में जवानी और यौवन के बाद बुढ़ापा और कमज़ोरी आ जाती है और इंसान की समझ बच्चे की तरह हो जाती है।

[2] यह इंसान से ख़िताब है फटकार के लिए कि अल्लाह ने तुझे अच्छे रूप में बनाया और इसके ख़िलाफ़ वह तुझे अपमान के गड़हे में भी गिरा सकता है इसका मतलब है कि दोबारा जीवन देना कठिन नहीं इस के बाद भी तू क़यामत और बदले का इंकार करता है।

* **सूरतुल अलक** : यह सब से पहली प्रकाशना (वह्यी) है जो नबी (ﷺ) पर उस समय आई जब आप हिरा पर्वत की गुफा में उपासना (इबादत) में लीन (मशग़ूल) थे। फ़रिश्ते ने आकर कहा पढ़, आप ने फ़रमाया : मै तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ, फ़रिश्ते ने आप को ज़ोर से भींचा और कहा पढ़, आप ने फिर वही जवाब दिया, इस तरह तीन बार आप को भींचा (तफ़सील के लिये देखिए सहीह अलबुख़ारी, बाब बदउल वह्यी-मुस्लिम अलईमान बाबु बदइल वह्यी) اقرأ जो तेरी तरफ़ वह्यी की जाती है वह पढ़ خَلَقَ जिस नें सारी दुनिया को बनाया।

२. जिस ने इंसान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया।

خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ عَلَقٍ (2)

३. तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला है।

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ (3)

४. जिस ने क़लम के द्वारा (ज्ञान) सिखाया।

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ (4)

५. जिस ने इंसान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।

عَلَّمَ الْإِنسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ (5)

६. हक़ीक़त में इंसान तो आपे से बाहर हो जाता है।

كَلَّا إِنَّ الْإِنسَانَ لَيَطْغَىٰ (6)

७. इसलिए कि वह अपने आप को बेफ़िक्र (या धनवान) समझता है।

أَن رَّآهُ اسْتَغْنَىٰ (7)

८. बेशक लौटना तेरे रब की तरफ़ है।

إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ (8)

९. (भला) उसे भी तूने देखा जो (एक बन्दे को) रोकता है।

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ (9)

१०. जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है।

عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ (10)

११. भला बताओ तो अगर वह सीधे रास्ते पर हो।

أَرَأَيْتَ إِن كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ (11)

१२. या परहेज़गारी का अनुदेश (हुक्म) देता हो।[1]

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ (12)

१३. भला देखो तो अगर यह झुठलाता हो और मुँह फेरता हो तो।

أَرَأَيْتَ إِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ (13)

१४. क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) उसे अच्छी तरह देख रहा है।

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ (14)

---

[1] यानी ख़ालिस, तौहीद (एकेश्वरवाद) और नेकी के कामों की शिक्षा, जो नरक की आग से इंसान को बचा सकती है, तो क्या यह चीज़े [नमाज़ पढ़ना और संयम (तक़्वा) की शिक्षा (नसीहत देना] ऐसी बातें हैं कि उनका विरोध (मुख़ालफ़त) किया जाये और उस पर उसे धमकियां दी जायें?

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ (15)

१५. बेशक अगर ये नहीं रूका तो हम उस की पेशानी (ललाट) के बाल पकड़कर घसीटेंगे।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ (16)

१६. ऐसी पेशानी जो झूठी और पापी है।[1]

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ (17)

१७. वह अपने सभा वालों को बुला ले।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ (18)

१८. हम भी नरक के रक्षकों (निगराँ) को बुला लेंगे।

كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِب (19) السجدة

१९. सावधान! उसका कहना कभी न मानना और सज्दा करो और क़रीब हो जाओ।

## سُورَةُ القَدْرِ

## सूरतुल क़द्र-९७

सूरतुल क़द्र* मक्का में उतरी और इस में पाँच आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ (1)

१. बेशक हम ने उसे क़द्र (बरकत) की रात में नाज़िल किया।[2]

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ (2)

२. तू क्या समझा कि क़द्र (बरकत) की रात क्या है?

---

[1] पेशानी के इस गुण (सिफ़त) का मतलब है कि वह झूठी है अपनी बात में, पापी है अपने काम में।

* **सूरतुल क़द्र** : इस सूरत के मक्की और मदनी होनें में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है, इसका नाम रखने के कारण में इख़्तिलाफ़ है, क़द्र के मायने एहतेराम के भी है, इसी वजह से क़द्र की रात कहते हैं, इसका अर्थ (मायेना) अंदाज़ा लगाना और फ़ैसला करना भी है, इस में पूरे साल का फ़ैसला किया जाता है, इसीलिये इसे لَيْلَةُ الْحُكْم भी कहते हैं।

[2] यानी उतारना शुरू किया और लौहे महफ़ूज़ से बैतुल इज़्ज़त में जो पहले आकाश पर है उतारा, और वहाँ से ज़रूरत के मुताबिक़ नबी (ﷺ) पर उतारता रहा। यहाँ तक कि लगभग २३ साल में पूरा हो गया और लैलतुल क़द्र रमज़ान ही में होती है। जैसाकि क़ुरआन की आयत (شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ) से साफ़ है।

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿3﴾

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ
رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ﴿4﴾

سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿5﴾

## سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ
الْبَيِّنَةُ ﴿1﴾

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿2﴾

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿3﴾

३. क़द्र की रात एक हज़ार महीनों से बेहतर है।

४. इस में (हर काम को पूरा करने के लिये) अपने रब के हुक्म से फ़रिश्ते और रूह (जिब्रील) उतरते हैं।[1]

५. यह रात साक्षात् (सरासर) शान्ति की होती है, और फ़ज्र के निकलने तक (होती है)।

## सूरतुल बय्यिनः-९८

सूरतुल बय्यिनः* मदीनें में नाज़िल हुई और इस मे आठ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अहले किताब के काफ़िर और मूर्तिपूजक लोग, जब तक कि उन के पास स्पष्ट (वाज़ेह) निशानी न आ जाये रूकने वाले न थे (वह निशानी यह थी कि)

२. अल्लाह (तआला) का एक रसूल जो पाक किताब पढ़े।

३. जिस में ठीक और सही अहकाम हों।[2]

---

[1] रूह से अभिप्राय (मुराद) हज़रत जिब्रील हैं, यानी फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील सहित इस रात धरती पर उतरते हैं और उन कामों को पूरा करते हैं जिनका फ़ैसला इस साल में अल्लाह (तआला) फ़रमाता है।

* **सूरतुल बय्यिनः** इसका दूसरा नाम सूरत لَمْ يَكُنْ है। हदीस में है, नबी (ﷺ) ने हज़रत उबय्य बिन काब से फ़रमाया : अल्लाह ने मुझे आज्ञा दी है कि, मैं सूरत (لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا) तुझे पढ़ कर सुनाऊँ। हज़रत उबय्य ने पूछा, क्या अल्लाह ने आप के सामने मेरा नाम लिया है, आप ने फ़रमाया हाँ, जिस पर (बहुत ख़ुशी से) उबय्य की आँखों में आँसू आ गये। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरत लम यकुन)

[2] यहां كُتُبٌ किताबों से मुराद शरीअत और قَيِّمَةٌ संतुलित (मोतदिल) और सीधे।

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ؕ (4)

४. अहले किताब अपने पास साफ़ निशानी आ जाने के बाद ही मतभेद (इख़्तिलाफ़) में पड़कर बँट गये।

وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۙ۬ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ؕ (5)

५. उन्हें इस के सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध (ख़ालिस) कर रखें। (इब्राहीम) एकेश्वरवादी[1] के धर्म पर, और नमाज़ को क़ायम रखें और ज़कात देते रहें, यही धर्म सीधी मिल्लत का है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ
فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ
شَرُّ الْبَرِيَّةِ ؕ (6)

६. बेशक जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हुए और मूर्तिपूजक, वे नरक की आग (में जायेंगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, ये लोग बहुत बुरी मख़लूक़ हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ
خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ؕ (7)

७. बेशक जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये, ये लोग बेहतरीन मख़लूक़ हैं।

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ
رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ
لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ؒ (8)

८. उनका बदला उन के रब के पास हमेशा रहने वाले स्वर्ग हैं जिन के नीचे (ठंडे पानी की) नहरें बह रही हैं जिन में वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह (तआला) उन से ख़ुश हुआ और ये उस से। ये है उसके लिये जो अपने रब से डरे।[2]

---

[1] حَنِيْف का मतलब है झुकना, एकाग्र (यकसू) होना, حُنَفَاء बहुवचन (जमा) है यानी बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की तरफ़ और सभी मतों से कटकर इस्लाम धर्म की तरफ़ झुकते और यकसू होते हुए, जैसे हज़रत इब्राहीम ने किया।

[2] यानी यह बदला और ख़ुशहाली उन लोगों के लिये है जो दुनिया में अल्लाह से डरते रहते हैं और इस डर की वजह से अल्लाह की अवज्ञा (नाफ़रमानी) से बचते हैं। अगर किसी समय इंसानी तक़ाज़ा की वजह से अल्लाह की नाफ़रमानी हो गई तो तुरन्त क्षमायाचना (तौबा) कर ली और भविष्य (मुस्तक़बिल) के लिये अपना सुधार कर लिया यहाँ तक कि उनकी मौत इसी आज्ञापालन (इताअत) पर हुई न कि नाफ़रमानी पर। इसका मतलब यह है कि जो अल्लाह का डर रखता है वह नाफ़रमानी पर दुराग्रह (इसरार) नहीं करता न उस पर बाक़ी रहता और जो ऐसा नहीं करता है हक़ीक़त में उसका दिल अल्लाह के डर से ख़ाली है।

# सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल-९९

سُورَةُ الزَّلْزَالِ

सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल* मदीने में नाज़िल हुई और इस में आठ आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿1﴾

१. जब धरती पूरी तरह से झिझोंड़ दी जायेगी।[1]

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ﴿2﴾

२. और अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी।[2]

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿3﴾

३. और इंसान कहने लगेगा कि उसे क्या हो गया?

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ﴿4﴾

४. उस दिन धरती अपनी सभी सूचनायें (ख़बर) बयान कर देगी।[3]

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ﴿5﴾

५. इसलिए कि तेरे रब ने उसे हुक्म दिया होगा।

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ﴿6﴾

६. उस दिन लोग मुख़तलिफ़ जमाअतों (समूहों) में होकर लौटेंगे ताकि उन्हें उनके कर्म (अमल) दिखा दिये जायें।

---

* **सूरतुज़ ज़िल्ज़ाल** : इस के मक्की और मदनी होनें में मतभेद (इख़्तिलाफ़) है, इसकी प्रधानता (फ़ज़ीलत) में अनेकों रिवायतें हैं, लेकिन उन में से कोई भी सही नहीं है।

[1] इसका मतलब यह है कि सख़्त भूंचाल (ज़लज़ला) से पूरी धरती काँप जायेगी और हर चीज़ टूट-फूट जायेगी, यह समय होगा जब पहला नफ़ख़ा (फूँक) होगा।

[2] यानी धरती में जितने इंसान गड़े हुए हैं वह धरती का बोझ हैं, जिन्हें धरती क़यामत के दिन निकाल फेंकेगी, यानी अल्लाह के हुक्म से सब ज़िन्दा होकर बाहर निकल आयेंगे यह दूसरे नफ़ख़े (फूँक) में होगा। इस तरह धरती के ख़ज़ाने भी बाहर निकल आयेंगे।

[3] यह शर्त का जवाब है। हदीस में है कि नबी (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी और सवाल किया, जानते हो धरती की सूचनाऐं क्या हैं? सहाबा ने जवाब दिया अल्लाह और उस के रसूल अच्छी तरह जानते हैं। आप ने फ़रमाया : उसकी सूचनायें यह हैं कि जिस बन्दे या बन्दी ने धरती के ऊपर जो कुछ किया होगा उसकी गवाही देगी कहेगी अमुक-अमुक (फ़लाँ-फ़लाँ) इंसान ने अमुक-अमुक काम अमुक-अमुक दिन किया था। (तिर्मिज़ी, अबवाबु सिफ़ातिल क़ियामः और तफ़सीर इज़ा ज़ुलज़िलत, मुसनद अहमद २\३७४)

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ (7)

७. तो जिस ने कण (ज़र्रे) के बराबर भी पुण्य (नेकी) किया होगा वह उसे देख लेगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ (8)

८. और जिस ने कण (ज़र्रे) के बराबर भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा।

## سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ

## सूरतुल आदियात-१००

सूरतुल आदियात मक्का में नाज़िल हुई और इस में ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا (1)

१. हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम।[1]

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا (2)

२. फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की क़सम।

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا (3)

३. फिर सुबह (प्रात:काल) में धावा बोलने वालों की क़सम।

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا (4)

४. तो उस समय धूल उड़ाते हैं।

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا (5)

५. फिर उसी के साथ सेनाओं के बीच घुस जाते हैं।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ (6)

६. बेशक इंसान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा (कृतघ्न) है।

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ (7)

७. और यक़ीनी तौर से वह ख़ुद भी उस पर गवाह है।

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ (8)

८. और ये माल के प्रेम में भी बड़ा कठोर (सख़्त) है।

---

[1] **सूरतुल आदियात** : عَادِيَاتٌ यह عَادِيَةٌ का बहुवचन (जमा) है, यह عَدْوٌ से है जैसे غَزْوٌ है غَازِيَاتٌ की तरह उस के «वाव» को भी या से बदल दिया गया।

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ (9)

९. क्या उसे वह समय मालूम नहीं, जब क़ब्रों में जो कुछ है निकाल दिये जायेंगे।

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ (10)

१०. और सीनों में छिपी बातों को ज़ाहिर कर दिया जायेगा।

إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَخَبِيرٌ (11)

११. बेशक उन का रब उस दिन उन के हाल से पूरी तरह से परिचित (वाक़िफ़) होगा।

## सूरतुल क़ारिअ:-१०१

## سُورَةُ الْقَارِعَةِ

सूरतुल क़ारिअ: मक्का में नाज़िल हुई और इस में ग्यारह आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

الْقَارِعَةُ (1)

१. खड़खड़ा देने वाली?[1]

مَا الْقَارِعَةُ (2)

२. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ (3)

३. तुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ (4)

४. जिस दिन इंसान बिखरे हुए पतिंगों की तरह हो जायेंगे।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ (5)

५. और पहाड़ धुने हुए रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।[2]

---

[1] **सूरतुल क़ारिअ:** : यह भी क़यामत के नामों में से एक नाम है जैसे इस से पहले इस के कई नाम गुज़र चुके हैं, जैसे الحَاقَّةُ अलहाक्क:, الطَّامَّةُ अततामम:, الصَّاخَّةُ अससाख्ख:, الغَاشِيَةُ अलगाशिय:, السَّاعَةُ अससाअ:, الوَاقِعَةُ अलवाक़िअ: आदि (वग़ैरह)। अलक़ारिअ: इसे इसलिये कहते हैं कि यह अपनी भयानकता की वजह से दिलों को डराने और अल्लाह के दुश्मनों को अज़ाब से ख़बर करेगी जैसे दरवाज़ा खटखटाने वाला करता है।

[2] عِهْنٌ उस ऊन को कहते हैं जो कई रंगों के रंगे हुये हों مَنفُوش धुने हुए। यह पर्वतों की हालत बताई गई है जो क़यामत के दिन उनकी होगी।

६. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे।

७. वह तो बड़े सुखदायी जीवन में होगा।

८. और जिस के पलड़े हल्के होंगे।

९. उसका ठिकाना 'हाविया' है।[1]

१०. तुझे क्या पता कि वह क्या है।

११. वह बहुत तेज़ भड़कती हुई आग है।[2]

فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ (6)

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ (7)

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ (8)

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ (9)

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ (10)

نَارٌ حَامِيَةٌ (11)

## सूरतुत तकासुर-१०२

## سُورَةُ التَّكَاثُرِ

सूरतुत तकासुर मक्का में नाज़िल हुई और इस में आठ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. अधिकता (ज़्यादती) के प्रेम ने तुम्हें अचेत (ग़ाफ़िल) कर दिया।

२. यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे।[3]

३. कभी नही तुम जल्द ही मालूम कर लोगे।

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ (1)

حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ (2)

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ (3)

---

[1] هَاوِيَة नरक का नाम है, उस को हाविया इस वजह से कहते हैं कि नरकीय उसकी गहराई में गिरेगा और उसे أُمّ (माँ) से इसलिये व्यंजित (ताबीर) किया गया कि जिस तरह माँ बच्चों के लिए पनाह की जगह होती है इसी तरह नरकियों के पनाह की जगह नरक होगी। कुछ कहते हैं कि أُمّ मायने दिमाग होता है, नरकीय नरक में सिर के बल डाले जायेंगे। (इब्ने कसीर)

[2] जैसे हदीस में है कि इंसान दुनिया में जो आग जलाता है यह नरक की आग का सत्तरवाँ हिस्सा है, नरक की आग दुनियाँ की आग से उनहत्तर गुना ज़्यादा है। (सहीह अलबुख़ारी)

[3] इस का मतलब यह है ज़्यादा पाने के लिए मेहनत करते-करते तुम्हें मौत आ गई और तुम समाधि स्थलों (क़ब्रों) में जा पहुँचे।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ④

४. फिर कभी नहीं तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ⑤

५. कभी नहीं अगर तुम यक़ीनी तौर से जान लो।

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ⑥

६. तो बेशक तुम नरक देख लोगे।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ⑦

७. तो तुम उसे यक़ीन की आँख से देख लोगे।

ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ⑧

८. फिर उस दिन तुम से ज़रूर-ज़रूर उपहारों (नेमतों) का सवाल होगा।[1]

## सूरतुल अस्र-१०३

سُورَةُ الْعَصْرِ

सूरतुल अस्र मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

وَالْعَصْرِ ①

१. ज़माने की क़सम।[2]

---

[1] यह सवाल उन नेमतों (अनुकम्पाओं) के बारे में होगा जो अल्लाह ने दुनियाँ में दी है, जैसे आँख, कान, दिल, शान्ति, सेहत, धन, दौलत और संतान (औलाद) आदि कुछ कहते हैं कि सवाल केवल काफ़िरों से होगा। कुछ कहते हैं कि हर एक ही से होगा क्योंकि केवल सवाल ही अज़ाब की वजह नहीं होगा, जिन्होंने नेमतों का इस्तेमाल अल्लाह के हुक्म के आधीन (ताबे) रहकर किया होगा वह सवाल के बावजूद भी यातना (अज़ाब) से महफ़ूज़ रहेंगे और जिन्होंने नाशुक्री की होगी वह धर लिये जायेंगे।

[2] **सूरतुल अस्र** ; युग (ज़माने) से मुराद रात-दिन का यह चक्कर है और उनका अदल-बदल कर आना, रात आती है तो अंधेरा हो जाता है और दिन से हर चीज़ प्रकाशित (रौशन) हो जाती है, इस के सिवा कभी रात लम्बी और दिन छोटा और रात लम्बी हो जाती है अगर दिनों का यही चक्कर ज़माना है जो अल्लाह की पूरी ताक़त और क़ुदरत का इशारा देता है इसलिए पालनहार ने उसकी क़सम ली है। यह पहले बतलाया जा चुका है कि अल्लाह तो अपनी सृष्टि (मख़लूक़) में से जिसकी चाहे क़सम खा सकता है लेकिन इंसान के लिये अल्लाह के सिवाय किसी की क़सम खाना वैध (जायेज़) नहीं है।

२. वास्तव (हक़ीक़त) में सारे इंसान सरासर घाटे में है।

३. उन के सिवाय जो ईमान लाये और नेक काम किये और (जिन्होंने) आपस में सच की वसीयत की और एक-दूसरे को धैर्य (सब्र) करने की नसीहत की।

إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ (2)

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ (3)

## सूरतुल हुमज़:-१०४

## سُورَةُ الْهُمَزَةِ

सूरतुल हुमज़: मक्का में नाज़िल हुई और इस में नौ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. बड़ी ख़राबी है उस इंसान की जो त्रुटियाँ (ऐब) टटोलने वाला चुगली करने वाला हो।[1]

وَيْلٌ لِكُلِّ هُمَزَةٍ لُمَزَةٍ (1)

२. जो माल को जमा करता जाये और गिनता जाये।[2]

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ (2)

३. वह समझे कि उस का माल उस के पास हमेशा रहेगा।

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ (3)

४. हरगिज़ नहीं यह तो ज़रूर तोड़-फोड़ देने वाली आग में फेंक दिया जायेगा।

كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ (4)

५. और तुझे क्या पता कि ऐसी आग क्या कुछ होगी?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ (5)

---

1 **सूरतुल हुमज़:** هُمَزَة और لُمَزَة कुछ के ख़्याल में पर्यायवाची (मुतरादिफ़) हैं, कुछ उस में कुछ फ़र्क करते हैं। हुमज़ा वह इंसान जो सामने बुराई करे और लुमज़ा जो पीठ-पीछे बुराई करे। कुछ इस से उल्टा मायने करते हैं, कुछ कहते हैं हम्ज़ आँखों और हाथों के इशारे से बुराई करना और लम्ज़ जबान से।

2 इस से अभिप्राय (मुराद) यही है जमा करना और गिन-गिन कर रखना, यानी सैंत-सैंत कर रखना और अल्लाह की राह में ख़र्च न करना, नहीं तो धन रखना निषेध (हराम) नहीं यह उसी समय मना है जब ज़कात सदके (दान) और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का इन्तेज़ाम न हो।

६. वह अल्लाह (तआला) की सुलगायी हुई आग होगी।

७. जो दिलों पर चढ़ती चली जायेगी।

८. हर तरफ़ से बंद की हुई होगी।

९. उन पर बड़े-बड़े स्तम्भ (सुतूनों) में।

## सूरतुल फ़ील-१०५

सूरतुल फ़ील मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया।[1]

२. क्या उस ने उनकी चाल को बेकार नही कर दिया?

३. और उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दिये।[2]

४. जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ मार रहे थे।[3]

५. तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।

نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ﴿6﴾

الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ﴿7﴾

اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ﴿8﴾

فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿9﴾

## سُوْرَةُ الْفِيْلِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ﴿1﴾

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ﴿2﴾

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ﴿3﴾

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ﴿4﴾

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿5﴾

[1] **सूरतुल फ़ील** : इस में हाथी वालों का बयान है जो यमन से ख़ाना कआबा को ढाने आये थे اَلَمْ تَرَ का मतलब है اَلَمْ تَعْلَمْ क्या तुझे ज्ञान (इल्म) नहीं? यह सवाल सकारात्मक (मुसबत) है, यानी तू जानता है या वह सब लोग जानते हैं जो तेरे ज़माने में है, यह इसलिये फ़रमाया कि अरब में यह घटना घटे अभी ज़्यादा समय गुज़रा नहीं था। मशहूर क़ौल के मुताबिक़ यह घटना (वाक़ेआ) उस समय घटी जिस साल नबी (ﷺ) का जन्म हुआ था इसलिये अरब में उस की ख़बरें प्रसिद्ध (मशहूर) और लगातार थीं।

[2] اَبَابِيْل यह किसी पक्षी का नाम नहीं इसका मतलब है झुन्ड।

[3] سِجِّيْل मिट्टी को आग में पकाकर बनाये हुए कंकड़। इन छोटे-छोटे कंकड़ों ने तोप के गोलों और बंदूक की गोलियों से ज़्यादा विनाश (हलाकत) का काम किया।

## सूरतु कुरैश-१०६

سُورَةُ قُرَيْشٍ

सूरतु कुरैश मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. कुरैश* को प्रेम दिलाने के लिए।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ⓵

२. (यानी) उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा (सफ़र) का आदी बनाने के लिए।

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ⓶

३. तो (उस शुक्रिये में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के रब की इबादत करते रहें।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ⓷

४. जिस ने उन्हें भूख में खाना दिया और डर (और भय) में अमन अता किया।[1]

الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ⓸

## सूरतुल माऊन-१०७

سُورَةُ الْمَاعُوْنِ

सूरतुल माऊन* मक्का में नाज़िल हुई इस में सात आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ⓵

२. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्के देता है।[2]

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ⓶

---

* **सूरतु कुरैश** : इसे सूरतुल ईलाफ भी कहते हैं, इस का तआल्लुक़ भी पहले की सूरत से है।

1 अरब में क़त्ल (हत्या) और लूटपाट सामान्य (आम) थी लेकिन मक्का के कुरैश को हरम की वजह से जो आदर-मान हासिल था उस की वजह से वे भय और डर से महफ़ूज़ थे।

* **सूरतुल माऊन**: इस सूरत को सूरतुद्दीन, सूरत अरऔत, और सूरतुल यतीम भी कहते हैं। (फ़तहुल क़दीर)

2 इसलिये कि एक तो कंजूस है, दूसरे क़यामत का इंकारी है, भला ऐसा इंसान यतीम के साथ क्योंकर अच्छा सुलूक कर सकता है? जिस के दिल में धन की जगह मानवीय मूल्यों और अख़लाक़ी उसूलों का महत्व (अहमियत) और प्रेम होगा वही यतीम के साथ अच्छा सुलूक करेगा, दूसरे यह कि उसे इस बात का यक़ीन हो कि उस के बदले मुझे क़यामत के दिन अच्छा बदला मिलेगा।

३. और ग़रीब (भूखे) को खाना खिलाने की प्रेरणा (तरग़ीब) नहीं देता।

وَلَا يَحُضُّ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ﴿3﴾

४. उन नमाज़ियों के लिए 'वैल' (नरक की एक जगह) है।

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّينَ ﴿4﴾

५. जो अपनी नमाज़ से अचेत (ग़ाफ़िल) हैं।[1]

الَّذِينَ هُمْ عَن صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ﴿5﴾

६. जो दिखावे का काम करते हैं।

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ﴿6﴾

७. और प्रयोग (इस्तेमाल) में आने वाली चीज़ें रोकते हैं।[2]

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ﴿7﴾

## सूरतुल कौसर-१०८

سُورَةُ الْكَوْثَرِ

सूरतुल कौसर* मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. बेशक हम ने तुझे कौसर (और बहुत कुछ) दिया है।

إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ﴿1﴾

---

[1] इस से वह लोग तात्पर्य (मुराद) हैं जो नमाज़ या तो पढ़ते ही नहीं या पहले पढ़ते रहे फिर आलसी (सुस्त) हो गये, या नमाज़ उस के नियमित (मुक़र्रर) समय से नहीं पढ़ते या देर से पढ़ने की आदत बना लेते हैं या ख़ुशूअ और ध्यान से नहीं पढ़ते। यह सभी मतलब इस में आ जाते हैं, इसलिए नमाज़ में सभी ग़फ़लतों से बचना चाहिये। यहाँ इस जगह पर चर्चा करने से यह भी स्पष्ट (वाज़ेह) है कि नमाज़ यह सुस्ती उन्हीं से होती है जो परलोक (आख़िरत) के प्रतिकार (बदले) और हिसाब, किताब पर यक़ीन नहीं रखते।

[2] مَعُنْ थोड़ी चीज़ को कहते हैं। कुछ इसका मतलब ज़कात (देयदान) लेते हैं, क्योंकि वह भी असल माल के मुक़ाबले बहुत कम होती है। (ढाई प्रतिशत) कुछ ने इससे घरों में इस्तेमाल की चीज़ें ली हैं जो पड़ोसी एक-दूसरे से मँगनी में माँग लिया करते हैं। मतलब हुआ घरेलू प्रयोग की चीज़ें मंगनी में दे देना, इस में तंगी न ज़ाहिर करना अच्छे गुण (सिफ़त) हैं और इस के ख़िलाफ़ बख़ीली और कंजूसी बरतना यह क़यामत के मुंकिरों का आचरण (अख़्लाक़) है।

* **सूरतुल कौसर** : इसका दूसरा नाम सूरतुन नह्र भी है।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ⓶

२. तो तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और क़ुर्बानी कर ।[1]

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ⓷

३. बेशक तेरा दुश्मन ही लावारिस और बेनाम व निशान है ।

## سُورَةُ الْكَافِرُونَ

## सूरतुल काफ़िरून-१०९

सूरतुल काफ़िरून* मक्का में नाज़िल हुई और इस में छः आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ⓵

१. आप कह दीजिये कि हे काफ़िरो!

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ⓶

२. न मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो ।

وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ⓷

३. और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ ।

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ⓸

४. और न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिस की तुम ने इबादत की ।

وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ⓹

५. न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ ।

---

[1] यानी नमाज़ भी केवल अल्लाह के लिये और क़ुर्बानी भी केवल एक अल्लाह के नाम पर । मुशरिकों की तरह इस में दूसरों को शामिल न कर । نَحْر का असल मायेना है ऊँट के गले में नीज़ा या छुरी मार कर वध (ज़िब्ह) करना । दूसरे जानवरों को ज़मीन पर लिटाकर उन के गलों पर छुरी फेरी जाती है उसे ज़िब्ह करना कहते हैं लेकिन यहाँ नहर से मुराद आम क़ुर्बानी है, इस के सिवा इस में दान-पुण्य (सदक़ा-ख़ैरात) के रूप में बलि (क़ुर्बानी) देना, हज के मौक़ा पर मिना में ईदुल अज़्हा के दिन क़ुर्बानी करना सब शामिल है ।

* **सूरतुल काफ़िरून:** सही हदीसों से साबित है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तवाफ़ की दो रकअतों, और फ़ज्र और मग़रिब की सुन्नतों में (قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ) और सूरतुल इख़्लास पढ़ते थे । इसी तरह आप ने कुछ सहाबा से फ़रमाया कि रात को सोते समय यह सूरत पढ़कर सोओगे तो शिर्क से बरी माने जाओगे । (मुसनद अहमद ५\४५६, तिर्मिज़ी ३४०३, अबूदाऊद न॰ ५०५५)

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ⑥

६. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म (दीन) है और मेरे लिये मेरा धर्म है।

## سُورَةُ النَّصْرِ

## सूरतुन नस्र-११०

सूरतुन नस्र* मदीने में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ①

१. जब अल्लाह की मदद और विजय (फ़त्ह) हासिल हो जाये।

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ②

२. और तू लोगों को अल्लाह के धर्म की तरफ़ झुंड के झुंड आता देख ले।[1]

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ③

३. तो तू अपने रब की महिमा (तस्बीह) और तारीफ़ करने में लग, और उस से माफ़ी की दुआ कर, बेशक वह माफ़ करने वाला है।

## سُورَةُ اللَّهَبِ

## सूरतुल लहब -१११

सूरतु लहब* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

---

* **सूरतुन नस्र :** अवतरण (नुज़ूल) के हिसाब से यह आख़िरी सूरत है (सहीह मुस्लिम, किताबुत तफ़सीर) यह सूरत उतरी तो कुछ सहाबा समझ गये कि अब नबी (ﷺ) का अन्तिम समय आ गया है, इसलिये आप को तस्बीह और क्षमायाचना (तौबा) का हुक्म दिया गया है, जैसे हज़रत इब्ने अब्बास और हज़रत उमर का कलाम सहीह बुख़ारी में है। (तफ़सीर सुरतुन नस्र)

[1] अल्लाह की मदद से अभिप्राय (मुराद) है इस्लाम और मुसलमानों का कुफ़्र और काफ़िरों पर ग़ल्बा, और فتح फ़त्ह से मुराद मक्का की फ़त्ह है, मक्का फ़त्ह से लोगों पर यह बात खुल गई कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर (संदेष्टा) है और इस्लाम धर्म (दीन) सच्चा धर्म है जिस के बिना आख़िरत की नजात मुमकिन नहीं, अल्लाह ने फ़रमाया कि जब ऐसा हो तो।

* सूरतुल लहब : इसे सूरतु तब्बत भी कहते हैं इस के अवतरण (नुज़ूल) के बारे में आता है कि जब नबी (ﷺ) को हुक्म हुआ कि अपने क़रीबी रिश्तेदारों को डरायें और उपदेश दें, तो आप ने सफा पर्वत पर चढ़कर يَا صَبَاحَاه की आवाज़ लगाई, ऐसी आवाज़ ख़तरे की निशानी मानी जाती थी।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बहुत मेहरबान और रहम करने वाला है।

تَبَّتۡ يَدَاۤ اَبِىۡ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ ﴿1﴾

१. अबू लहब के दोनों हाथ टूटे गये और वह (ख़ुद) नाश हो गया।

مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ؕ ﴿2﴾

२. न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमायी।

سَيَصۡلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۖۚ ﴿3﴾

३. वह मुस्तक़बिल क़रीब में भड़कने वाली आग में जायेगा।

وَّامۡرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الۡحَطَبِ ۚ ﴿4﴾

४. और उसकी पत्नी भी (जायेगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।

فِىۡ جِيۡدِهَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ﴿5﴾

५. उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी।[1]

---

आप (ﷺ) की पुकार पर लोग जमा हो गये। आप ने फ़रमाया : तनिक बताओ, अगर मैं तुम को ख़बर दूँ कि इस पहाड़ के पीछे एक घुड़सवार सेना है जो तुम पर हमला करना चाहती है, तो तुम मेरी बात मानोगे? उन्होंने कहा क्यों नहीं। हम ने आप को कभी झूठा नहीं पाया। आप ने फ़रमाया : फिर मैं तुम्हें एक बड़े प्रकोप (अज़ाब) से डराने आया हूँ। (अगर तुम कुफ़्र और शिर्क पर डटे रहे) यह सुनकर अबूलहब ने कहा تَبًّا لَكَ तेरा नाश हो, क्या तूने हमें इस के लिये जमा किया था जिस पर अल्लाह ने यह सूरत उतारी। (सहीह अलबुख़ारी, तफ़सीर सूरतु तब्बत) अबूलहब का वास्तविक नाम अब्दुल उज़्ज़ा था, उसकी ख़ूबसूरती, शोभा (ज़ीनत) और चेहरे की लाली की वजह से उसे अबू लहब कहा जाता था, इस के सिवा अपने अन्त के आधार पर भी उसे नरक का ईंधन बनना था। यह नबी (ﷺ) का सगा चचा था किन्तु आप का कट्टर दुश्मन और उसकी पत्नी उम्मे जमील बिन्ते हर्ब भी दुश्मनी में अपने पति से कम न थी।

[1] جِيدٌ गर्दन مَسَدٌ मज़बूत बटी हुई रस्सी, वह मूँज की या खजूर की छाल की, या लोहे के तारों की। जैसाकि कई लोगों ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) किया है। कुछ ने कहा कि यह दुनियाँ में डाले रखती थी, जिसका बयान किया गया, लेकिन ज़्यादा सहीह बात यह लगती है कि नरक में उस के गले में जो तौक़ होगा वह लोहे के तारों से बटा होगा। مَسَدٌ से उपमा उसकी कड़ाई और मज़बूती को स्पष्ट (साफ़) करने के लिये दी गई है।

## सूरतुल इख़्लास-११२

سُورَةُ الإِخْلَاصِ

सूरतुल इख़्लास* मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ﴿1﴾

२. अल्लाह (तआला) बेनियाज़ है।[1]

اللَّهُ الصَّمَدُ ﴿2﴾

३. न उस से कोई पैदा हुआ और न उसे किसी ने पैदा किया।[2]

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ﴿3﴾

४. और न कोई उसका समकक्ष (हमसर) है।[3]

وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ﴿4﴾

---

* **सूरतुल इख़्लास :** यह संक्षिप्त (मुख़्तसर) सूरत बड़ी प्रधानता (फ़ज़ीलत) रखती है। इसे नबी (ﷺ) ने एक तिहाई क़ुरआन कहा है और इसे रात को पढ़ने का प्रलोभन (तरग़ीब) दिया है। (सहीह अलबुख़ारी) कुछ सहाबा दूसरी सूरतों के साथ हर रकअत में इसे मिलाकर जरूर पढ़ते थे, जिस पर नबी (ﷺ) ने उनसे फ़रमाया: तुम्हारा इस से प्रेम तुम्हें स्वर्ग मे ले जायेगा। (बुख़ारी, किताबुत तौहीद, किताबुल अज़ान, बाबुल जमओ बैनस सूरतैने फिर रकअ: मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन) इस के उतरने की वजह यह बताई गई है कि मुशरिकीन ने आप से कहा कि अपने रब का नसब बताओ। (मुसनद अहमद, ५\१३३,१३४)

1 यानी सब उस के सामने मुहताज हैं और वह सब से निस्पृह (बेनियाज़) और निरपेक्ष है।

2 यानी न उस से कोई चीज़ निकली है न वह किसी चीज़ से निकला है।

3 न उस की ज़ात में न उसकी विशेषताओं में न उस के कर्मों (अमल) में ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ﴾ (अश शूरा-११) हदीसे क़ुदसी में है कि अल्लाह (तआला) फ़रमाता है कि इंसान मुझ को गाली देता है यानी मेरे लिये संतान सिद्ध (साबित) करता है। जबकि मैं अकेला हूँ, निस्पृह (बेनियाज़) हूँ, मैने न किसी को जन्म दिया है, न मैं किसी से पैदा हुआ, न कोई मेरे बराबर है। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर कुल हुवल्लाहु अहद) इस सूरत में उनका भी खण्डन (तरदीद) हो गया जो अनेक ईश्वर मानते हैं और उनकी भी जो अल्लाह की औलाद मानते हैं और उनकी भी जो दूसरों को उसका साझी कहते हैं और उनकी भी जो अनिश्वरवादी (नास्तिक) हैं।

## सूरतुल फ़लक़-११३

## سُورَةُ الْفَلَقِ

सूरतुल फ़लक़* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

१. आप कह दीजिये कि मैं सुबह के रब की पनाह में आता हूँ।[1]

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ (1)

२. हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है।

مِن شَرِّ مَا خَلَقَ (2)

३. और अंधेरी रात की बुराई से, जब उसका अँधेरा फैल जाये।

وَمِن شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ (3)

४. और गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)

وَمِن شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ (4)

५. और द्वेष (हसद) करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।[2]

وَمِن شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ (5)

---

* **सूरतुल फ़लक़** : इस के बाद सूरतुन नास है। इन दोनों की शामिल फ़ज़ीलत कई हदीसों में आई है। मिसाल के तौर पर एक हदीस में नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: आज रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें उतरी हैं जिन के समान मैंने कभी नहीं देखी। यह फ़रमा कर आप ने यह दोनों सूरतें पढ़ीं। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफिरीन) आप (ﷺ) का यह भी नियम था कि रात को सोते समय सूरतुल इख़लास और मुअव्वज़तैन पढ़कर अपने दोनों हथेलियों पर फूँकते फिर उन्हें पूरे शरीर पर मलते, पहले सिर, चेहरे और शरीर के अगले हिस्से पर हाथ फेरते, इस के बाद जहाँ तक आप के हाथ पहुँचते तीन बार आप ऐसा करते। (सहीह अलबुख़ारी, किताबु फ़ज़ायेलिल क़ुरआन, बाबु फ़ज़लिल मुअव्वज़ात)

[1] فَلَق का सहीह मायना भोर है, सुबह को इसलिये ख़ास किया कि जैसे अल्लाह (तआला) रात का अँधेरा ख़त्म करके दिन की रोशनी ला सकता है वह इसी तरह भय और डर को दूर करके पनाह माँगने वालों को शान्ति भी प्रदान (अता) कर सकता है, या इंसान रात को जिस तरह इस बात के इंतेज़ार में रहता है कि सवेरे उजाला हो जायेगा, इसी तरह डरा हुआ इंसान पनाह के ज़रिये कामयाबी के सूरज के निकलने की उम्मीद रखता है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] ईर्ष्या (हसद) यह है कि हसद करने वाला दूसरे की अच्छी चीज़ों की ख़त्म करने की कामना (तमन्ना) करता है, इसलिए उस से भी पनाह माँगी गई है, क्योंकि हसद भी एक बड़ा अख़लाक़ी रोग है जो नेकी को खा जाता है।

# सूरतुन नास-११४

سُورَةُ النَّاسِ

सूरतुन नास* मक्का में नाज़िल हुई और इस में छः आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रब की पनाह में आता हूँ।[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿1﴾

२. लोगों के मालिक की। (और)

مَلِكِ النَّاسِ ﴿2﴾

३. लोगों के पूजने लायक़ की (पनाह में)।[2]

اِلٰهِ النَّاسِ ﴿3﴾

४. शंका (शक) डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ﴿4﴾

५. जो लोगों के सीनों में शंका (वसवसा) डालता है।

الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿5﴾

६. (चाहे) वह जिन्न में से हो या इंसान में से।[3]

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿6﴾

---

* **सूरतुन नास :** इसकी फ़ज़ीलत पहले की सूरत के साथ बयान की जा चुकी है। एक दूसरी हदीस में है कि नबी (ﷺ) को नमाज़ में बिच्छू ने डस लिया नमाज के बाद आप ने पानी और नमक मँगवाकर उसके ऊपर मला और साथ-साथ ﴿قُلْ يٰاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ﴾﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ﴾﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ पढ़ते रहे। (मज्मउज्ज़ जवायेद ५\१११ और हैसमी ने कहा कि इसकी सनद हसन है)

[1] رَبّ (रब) का मतलब है जो (शुरू) ही से जब इंसान अभी माँ के गर्भाशय ही में होता है उस की तदबीर और सुधार करता है यहाँ तक कि वह बालिग़ हो जाता है फिर वह यह तरीक़ा केवल कुछ ख़ास लोगों के लिये नहीं बल्कि सभी मानव जाति के लिये करता है और सभी मानव जाति के लिये ही नहीं अपनी पूरी मख़लूक़ के लिये करता है, यहाँ केवल इंसानों की चर्चा उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) और प्रधानता (अज़मत) दिखाने के लिये है जो उन्हें पूरी मख़लूक़ पर हासिल है।

[2] जो सारी दुनिया का पालनहार हो, पूरी सृष्टि (मख़लूक़) उसी के ताबे है। वही सत्ता इस बात के लायक़ है कि उसकी उपासना (इबादत) की जाये और वही सब लोगों का पूज्य (माबूद) हो, इसलिए उसी महान और बुलन्द ज़ात की पनाह प्राप्त (हासिल) करता हूँ।

[3] यह वस्वसा (गुप्त ध्वनि) डालने वाले दो तरह के हैं जिन्नातों के शैतान और मानव जाति के। पहले शैतान को अल्लाह तआला ने इंसान को गुमराह करने की ताक़त दी है, उस के सिवाय हर इंसान के साथ उसका एक शैतान साथी होता है जो उसको गुमराह करता रहता है। हदीस में है कि जब नबी (ﷺ) ने यह बात बताई तो सहाबा ने सवाल किया, हे अल्लाह के नबी क्या वह आप के साथ भी है, आप ने कहा, हाँ। लेकिन अल्लाह ने मेरी मदद की है और वह मेरा आज्ञाकारी (फ़रमाँबर्दार) है, मुझे भलाई के सिवाय किसी चीज को नहीं कहता। (सहीह मुस्लिम, किताबु सिफ़तिल क़ियामः)